University of Technology

परिसर प्रतिध्वनि

(नवोन्मेष, युवा ऊर्जा एवं अन्तःक्रिया का अभिव्यक्ति मंच)

मासिक भित्ति पत्रिका, अंक - 13, जनवरी 2026

प्रधान संरक्षक	-	श्रीमती मीनाक्षी सुराना
प्रमुख संरक्षक	-	डॉ. प्रेम सुराना
मुख्य संरक्षक	-	डॉ. अंशु सुराना
प्रेसिडेंट (वाइस चांसलर)	-	प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन
वरिष्ठ सलाहकार	-	प्रो. (डॉ.) अरविन्द कुमार अग्रवाल
प्रधान संपादक	-	प्रो. (डॉ.) अंकित गांधी
संपादक	-	डॉ. प्रेम कुमार
सह-संपादक	-	डॉ. मोनिका शर्मा, डॉ. भाग्यश्री खरे
खेल संपादक	-	श्री यश यादव

प्रेसिडेंट (वाइस चांसलर) महोदया का संदेश ...

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर की मासिक भित्ति पत्रिका 'परिसर प्रतिध्वनि' का तेरहवाँ अंक जनवरी 2026 के अवसर पर आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। यह पत्रिका हमारे विश्वविद्यालय की अकादमिक सक्रियता, सामाजिक प्रतिबद्धता और सांस्कृतिक चेतना का सजीव दस्तावेज है। इसके प्रत्येक अंक में परिसर की ऊर्जा, परिश्रम और रचनात्मकता की प्रतिध्वनि स्पष्ट रूप से सुनाई देती है। मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता होती है कि विश्वविद्यालय के सभी विभागों द्वारा संपादित और संचालित की गई शैक्षणिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की रिपोर्ट्स इस पत्रिका के माध्यम से पूरे परिसर तक पहुँचती हैं। इससे न केवल पारदर्शिता और संवाद की संस्कृति विकसित होती है, बल्कि विद्यार्थियों और शिक्षकों को एक-दूसरे के कार्यों से प्रेरणा लेने का अवसर भी मिलता है। 'परिसर प्रतिध्वनि' की एक विशेष उपलब्धि यह है कि यह छात्रों, अध्यापकों तथा विश्वविद्यालय के सभी कर्मचारियों की साहित्यिक और सामाजिक रचनात्मक अभिव्यक्तियों को समान सम्मान के साथ स्थान देती है।

प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन
प्रेसिडेंट (वाइस चांसलर)
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

कुलसचिव महोदय की कलम से...

'परिसर प्रतिध्वनि' में कविता, लेख, विचार और रचनात्मक प्रस्तुति के रूप में उभरती ये आवाज़ें हमारे परिसर को एक संवेदनशील, मानवीय और सृजनशील समुदाय के रूप में स्थापित करती हैं। आज के प्रतिस्पर्धात्मक और तकनीकी युग में यह आवश्यक है कि हम ज्ञान के साथ-साथ मूल्यों, सामाजिक सरोकारों और सांस्कृतिक चेतना को भी समान महत्व दें। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होगी और उन्हें जिम्मेदार, जागरूक तथा रचनात्मक नागरिक बनने के लिए प्रेरित करेगी। मैं परिसर प्रतिध्वनि के इस तेरहवें अंक के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल, सभी विभागों, लेखकों, रचनाकारों और सहयोगियों को हार्दिक बधाई देता हूँ। आशा है कि यह पत्रिका भविष्य में भी इसी उत्साह, गुणवत्ता और प्रतिबद्धता के साथ विश्वविद्यालय की उपलब्धियों और सृजनशीलता को अभिव्यक्त करती रहेगी।

नववर्ष 2026 के लिए आप सभी को शुभकामनाएँ। ज्ञान, नवाचार और मानवीय मूल्यों के पथ पर हमारा विश्वविद्यालय निरंतर अग्रसर रहे। इसी कामना के साथ....

डॉ. अनूप शर्मा
कुलसचिव
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

संपादकीय...

प्रिय पाठकों,
सप्रेम नमस्कार

विश्वविद्यालय केवल ईंट-पत्थरों से बने भवनों का समूह नहीं होता, बल्कि वह एक जीवंत विचार-परिसर होता है, जहाँ ज्ञान, संवेदना, सृजन और सामाजिक उत्तरदायित्व एक साथ आकार लेते हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर की मासिक भित्ति पत्रिका 'परिसर प्रतिध्वनि' इसी जीवंतता की अभिव्यक्ति है। यह पत्रिका हमारे परिसर में घटित अकादमिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों की प्रामाणिक प्रतिध्वनि बनकर सामने आती है। जनवरी 2026 का यह तेरहवाँ अंक नए वर्ष की नई चेतना और नए संकल्पों के साथ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। बीते माह विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों द्वारा आयोजित संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, व्याख्यानों, खेलकूद प्रतियोगिताओं, सांस्कृतिक उत्सवों तथा सामाजिक सरोकारों से जुड़ी गतिविधियों ने यह सिद्ध किया है कि तकनीकी शिक्षा के साथ-साथ मानवीय मूल्यों और सामाजिक संवेदनशीलता का विकास भी हमारी प्राथमिकता है। इन सभी गतिविधियों की संक्षिप्त लेकिन सारगर्भित रिपोर्ट्स इस अंक में संकलित हैं। परिसर प्रतिध्वनि की विशेषता यह है कि यह केवल प्रशासनिक या विभागीय उपलब्धियों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि छात्रों, अध्यापकों और विश्वविद्यालय के सभी कर्मचारियों की साहित्यिक, रचनात्मक और वैचारिक अभिव्यक्तियों को भी समान मंच प्रदान करती है। इस अंक में प्रकाशित कविताएँ, लघु लेख, विचार-नोट्स और रचनात्मक प्रस्तुतियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि हमारा परिसर बौद्धिक ही नहीं, बल्कि संवेदनशील और सृजनशील भी है। आज के तकनीकी और डिजिटल युग में विश्वविद्यालयों की भूमिका केवल कुशल मानव संसाधन तैयार करने तक सीमित नहीं रह गई है। समाज के प्रति उत्तरदायी नागरिक, नैतिक मूल्यों से युक्त युवा और रचनात्मक सोच रखने वाले व्यक्तित्व गढ़ना भी हमारी साझा जिम्मेदारी है। परिसर प्रतिध्वनि इसी दिशा में एक छोटा लेकिन सार्थक प्रयास है, जो संवाद, सहभागिता और सहअस्तित्व की संस्कृति को मजबूत करता है। हम आशा करते हैं कि यह अंक पाठकों को न केवल परिसर की गतिविधियों से परिचित कराएगा, बल्कि उन्हें सक्रिय सहभागिता, रचनात्मक अभिव्यक्ति और सकारात्मक सोच के लिए भी प्रेरित करेगा। अंत में, इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी विभागों, लेखकों, रचनाकारों और पाठकों का हार्दिक धन्यवाद। आपके सहयोग और सृजन से ही परिसर प्रतिध्वनि निरंतर सशक्त होती रहेगी।

डॉ. प्रेम कुमार
सह-आचार्य, हिंदी विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

नोट:
आप सभी से निवेदन है कि अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव हमें अवश्य दें, जिससे आगामी अंकों को और अधिक प्रभावशाली व उपयोगी बनाया जा सके।

‘ऑल प्रोसेसेस ऑफ ईआरपी’ विषय पर फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम आयोजित

दिनांक 17 दिसंबर 2025 को यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर द्वारा अपने शैक्षणिक एवं प्रशासनिक तंत्र को और अधिक सुदृढ़ एवं सक्षम बनाने के उद्देश्य से ‘ऑल प्रोसेसेस ऑफ ईआरपी’ विषय पर एक दिवसीय फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के समस्त अधिष्ठाता, समस्त प्रशासनिक अधिकारी, सभी शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम के विशेषज्ञ डॉ. कमल किशोर जांगिड ने ईआरपी(एंटरप्राइज रिसोर्स प्लानिंग) प्रणाली की मूल अवधारणा, उसके विभिन्न प्रोसेसेस तथा विश्वविद्यालय के शैक्षणिक और प्रशासनिक कार्यों में इसके उपयोग पर विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की। डॉ. कमल किशोर जांगिड ने अपने व्याख्यान में ईआरपी प्रणाली के माध्यम से प्रभावी डेटा प्रबंधन, पारदर्शिता, समयबद्ध कार्य निष्पादन तथा संस्थागत कार्यकुशलता में वृद्धि जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं पर विशेष रूप से प्रकाश डाला। उन्होंने ईआरपी सॉफ्टवेयर की प्रत्येक प्रक्रिया को व्यावहारिक रूप से प्रदर्शित करते हुए बताया कि ईआरपी का उपयोग किस प्रकार विश्वविद्यालय के दैनिक संचालन को अधिक संगठित व परिणामोन्मुख बनाता है।सत्र के दौरान प्रतिभागियों ने ईआरपी से संबंधित अपने प्रश्न पूछे तथा अपने अनुभव साझा किए। सभी ने कार्यक्रम को अत्यंत उपयोगी, व्यावहारिक तथा ज्ञानवर्धक बताया। विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से सभी कर्मचारियों की उपस्थिति इस कार्यक्रम में अनिवार्य रखी गई थी ताकि ईआरपी प्रणाली का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जा सके।

कार्यक्रम के समापन पर कुलसचिव डॉ. अनूप शर्मा ने कहा कि वर्तमान समय में विद्यार्थियों से सम्बन्धित सभी कार्य ईआरपी प्रणाली के माध्यम से संचालित किए जा रहे है। ऐसे में ईआरपी की प्रत्येक प्रक्रिया को समझना सभी कर्मचारियों के लिए अत्यंत आवश्यक एवं उपयोगी है। प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी ने आज के इस कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि इस फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम के माध्यम से कर्मचारियों को ईआरपी से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं की स्पष्ट एवं व्यावहारिक जानकारी एवं उनकी तकनीकी समझ में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। प्रेसिडेंट प्रोफेसर(डॉ.) रश्मि जैन ने अपने संदेश में कहा कि– “आज के डिजिटल युग में यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर तकनीक आधारित कार्यप्रणाली को अपनाकर शिक्षा एवं प्रशासन के क्षेत्र में निरंतर प्रगति कर रही है। ईआरपी जैसी प्रणाली विश्वविद्यालय के कार्यों को पारदर्शी, सुव्यवस्थित एवं समयबद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।” प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने अपने संदेश में कहा कि- “इस प्रकार के फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम विश्वविद्यालय में डिजिटल गवर्नेंस और कार्यप्रणाली की दक्षता को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल हैं। भविष्य में भी समय-समय पर ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर विश्वविद्यालय अपनी तकनीकी और प्रबंधकीय क्षमताओं को और अधिक मजबूत करेगा।”

राष्ट्रीय किसान दिवस का सफलतापूर्वक आयोजन

दिनांक 23 दिसंबर 2025 को यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर में राष्ट्रीय किसान दिवस का आयोजन पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की जयंती के अवसर पर किसानों के सम्मान एवं उनके योगदान को स्मरण करने हेतु किया गया। कार्यक्रम के दौरान कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. एस. एस. यादव ने देश में किसानों की वर्तमान स्थिति, उनकी समस्याओं तथा समाधान पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि किसानों की आय बढ़ाने तथा नई तकनीकों को अपनाने से कृषि क्षेत्र को सशक्त बनाया जा सकता है। विश्वविद्यालय की प्रेसिडेंट प्रोफेसर (डॉ.) रश्मि जैन ने इस अवसर पर किसानों के हित में आधुनिक कृषि तकनीक, औद्योगिक सहयोग एवं शोध आधारित नवाचारों को बढ़ावा देने पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि नई तकनीकों के प्रयोग से किसान आत्मनिर्भर बन सकते हैं।

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने अपने संदेश में अनुसंधान के माध्यम से किसानों को लाभ पहुंचाने हेतु निरंतर प्रयास करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की एवं कहा कि भविष्य में कृषि आधारित कार्यक्रम, कार्यशालाएँ एवं उन्नत तकनीकों से संबंधित प्रशिक्षण आयोजित किए जाएंगे, जिससे किसान विश्वविद्यालय की शैक्षणिक एवं तकनीकी गतिविधियों से लाभान्वित हो सकें। इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा किसानों की समस्याओं पर आधारित विचार प्रस्तुत किए गए। साथ ही, आधुनिक तकनीकों द्वारा कृषि से संबंधित विषयों पर भी चर्चा की गई। कुछ विद्यार्थियों ने तकनीकी नवाचार, स्मार्ट खेती, मृदा संरक्षण एवं जैविक कृषि जैसे विषयों पर अपने विचार रखे। इस अवसर पर कृषि के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले किसानों को भी सम्मानित किया गया।

‘द एक्चुअल वाइब’ सांस्कृतिक कार्यक्रम का भव्य आयोजन

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर में 24 दिसंबर 2025 को प्री-क्रिसमस ईवनिंग के अवसर पर भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम ‘द एक्चुअल वाइब- ताल और शैली का संगम’ का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभाओं को मंच प्रदान करना तथा कला एवं संस्कृति को प्रोत्साहित करना रहा। कार्यक्रम के अंतर्गत समूह एवं एकल नृत्य प्रस्तुतियाँ, मॉडलिंग प्रतियोगिता तथा विशेष आकर्षण के रूप में मिस यूओटी बीएससी प्रथम वर्ष की छात्रा रिहान आफरीन को एवं मिस्टर यूओटी के रूप में छात्र सन्नी धवन का चयन किया गया। प्रतिभागियों ने अपने आत्मविश्वास, व्यक्तित्व एवं प्रभावशाली मंचीय प्रस्तुतियों से निर्णायकों एवं दर्शकों को अत्यंत प्रभावित किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रेसिडेंट प्रोफ़ेसर (डॉ.) रश्मि जैन की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि- “सांस्कृतिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, रचनात्मकता एवं आत्म-अभिव्यक्ति को सशक्त बनाती हैं।” उन्होंने विद्यार्थियों के उत्साह एवं ऊर्जा की सराहना करते हुए भविष्य में भी इस प्रकार के आयोजनों के लिए पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

अपने संदेश में चेयरपर्सन डॉ. प्रेम सुराना ने कहा कि इस प्रकार के सांस्कृतिक आयोजन विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को बढ़ाने के साथ-साथ उनके सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रो-चेयरपर्सन डॉ. अंशु सुराना ने अपने संदेश में विद्यार्थियों की प्रतिभा को संस्थान की सबसे बड़ी शक्ति बताते हुए उन्हें निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम का मंच संचालन डॉ. चारू दुबे द्वारा अत्यंत प्रभावशाली, सुस्पष्ट एवं ऊर्जावान ढंग से किया गया, जिससे पूरे कार्यक्रम के दौरान उत्साहपूर्ण वातावरण बना रहा। कार्यक्रम के सफल आयोजन में स्टाफ कोऑर्डिनेटर श्री दिनेश चौधरी का विशेष योगदान रहा, साथ ही छात्र कॉर्डिनेटर रिहान आफरीन, लोकेश मीणा, सनी, प्रिया, पायल, संजना, हर्षित चौधरी एवं मीमो ने आयोजन को सफल बनाने में सराहनीय भूमिका निभाई। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. रजनी माथुर, डॉ. चारू दुबे, मनीषा यादव एवं खुशबू चौधरी के मार्गदर्शन में किया गया। कार्यक्रम के अंत में आयोजकों द्वारा सभी अतिथियों, प्रतिभागियों एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया गया वीर बाल दिवस

दिनांक 26 दिसंबर 2025 को यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर के मानविकी, कला एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वारा वीर बाल दिवस श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर साहिबज़ादों के अदम्य साहस, बलिदान और राष्ट्रप्रेम को स्मरण करते हुए एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के अधिकारीगण, शिक्षकगण, कर्मचारी तथा बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में उप-कुलाध्यक्ष डॉ. अंशु सुराना, प्रेसिडेंट प्रोफेसर (डॉ.) रश्मि जैन, प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी, डॉ. सीता राम माली, डॉ. जितेन्द्र चौधरी एवं श्री वेद प्रकाश चौधरी ने अपने-अपने व्याख्यान प्रस्तुत किए।

वक्ताओं ने वीर बालकों के बलिदान को भारतीय इतिहास की अमूल्य धरोहर बताते हुए कहा कि यह दिवस युवाओं में साहस, नैतिकता और राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना को सुदृढ़ करता है। कार्यक्रम का उद्देश्य युवा पीढ़ी को ऐतिहासिक चेतना से जोड़ते हुए मानवीय मूल्यों को आत्मसात कराना रहा। डॉ. अंशु सुराना (उप-कुलाध्यक्ष) ने कहा- "वीर बाल दिवस हमें यह संदेश देता है कि उम्र छोटी हो सकती है, लेकिन साहस और संकल्प असीम होते हैं। आज के युवाओं को इन आदर्शों से प्रेरणा लेनी चाहिए।" इस अवसर पर विद्यार्थियों ने सक्रिय सहभागिता करते हुए विचार-विमर्श में भाग लिया और प्रश्नोत्तर सत्र के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रेसिडेंट प्रोफेसर(डॉ.) रश्मि जैन ने अपने वक्तव्य में कहा- "साहिबज़ादों का बलिदान केवल इतिहास नहीं, बल्कि नैतिक मूल्यों का जीवंत पाठ है, जो हमें सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।" डॉ. अंकित गांधी (प्रो-प्रेसिडेंट) ने अपने वक्तव्य में कहा- "वीर बाल दिवस का आयोजन विश्वविद्यालय में संस्कार, संस्कृति और राष्ट्रबोध को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।" मानविकी, कला एवं सामाजिक विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. सीता राम माली ने कहा- "इतिहास के ऐसे प्रसंग विद्यार्थियों को आत्मबल और सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध कराते हैं।" कार्यक्रम में मंच संचालन का दायित्व श्री वेद प्रकाश चौधरी ने निभाया। कार्यक्रम का समापन डॉ. जितेंद्र चौधरी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। आयोजकों ने सभी अतिथियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों के सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया और भविष्य में भी ऐसे प्रेरणादायी कार्यक्रमों के आयोजन का संकल्प दोहराया।

विश्व हिंदी दिवस पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन हुआ

दिनांक 10 जनवरी 2026 को यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर ने आज विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में एक भव्य समारोह का आयोजन किया। इस अवसर के मुख्य संयोजक डॉ. सीता राम माली और डॉ. प्रेम कुमार रहे। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के वरिष्ठ अधिकारीगण, जिनमें उप-कुलाध्यक्ष डॉ. अंशु सुराना, प्रेसिडेंट प्रोफ़ेसर (डॉ.) रश्मि जैन, तथा प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी उपस्थित थे। इस अवसर पर डॉ. अंशु सुराना(उप-कुलाध्यक्ष) ने अपने वक्तव्य के दौरान कहा– "हिंदी न केवल हमारी मातृभाषा है, बल्कि यह विश्व मंच पर भारत की सांस्कृतिक शक्ति का प्रतीक है।" विश्वविद्यालय की प्रेसिडेंट प्रोफ़ेसर(डॉ.) रश्मि जैन ने अपने व्याख्यान में हिंदी भाषा की विशेषताओं को उल्लेखित करते हुए कहा कि– "हिंदी के वैश्विक विस्तार में तकनीक और शिक्षा का समन्वय आवश्यक है, हम इस दिशा में निरंतर कार्य करेंगे।"

विश्वविद्यालय के प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी ने हिंदी भाषा के वैश्विक परिदृश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि- "हिंदी के माध्यम से हम वैश्विक विचारों को भारतीय दृष्टिकोण से प्रस्तुत कर सकते हैं, यही हमारी आज़ादी की सच्ची अभिव्यक्ति है।" विभिन्न विद्वानों के साथ पैनल चर्चा, जिसमें हिंदी के शैक्षणिक, सांस्कृतिक और तकनीकी पहलुओं पर प्रकाश डाला गया। चित्रकारी प्रतियोगिता के अंतर्गत 'हिंदी की सौंदर्यात्मक अभिव्यक्ति' विषय पर 45 से अधिक छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। निबंध प्रतियोगिता 'हिंदी का भविष्य: चुनौतियाँ और अवसर' शीर्षक पर 30 से अधिक प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं तथा हिंदी कवि गोष्ठी एवं लोक संगीत पर विशेष सत्र आयोजित किया गया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान एवं धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। विश्वविद्यालय ने घोषणा की कि आगे भी हिंदी विकास के लिए शैक्षणिक कार्यशालाएँ, ऑनलाइन पाठ्यक्रम और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा दिया जाएगा।

राष्ट्रीय युवा दिवस 2026 का भव्य समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न

दिनांक 12 जनवरी 2026 को यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर ने आज राष्ट्रीय युवा दिवस के उपलक्ष्य में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर के मुख्य संयोजक डॉ. प्रेम कुमार, सुश्री प्रतिभा वशिष्ठ एवं डॉ. सीता राम माली रहे। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के वरिष्ठ अधिकारीगण, जिनमें विश्वविद्यालय के उप-कुलाध्यक्ष डॉ. अंशु सुराना, प्रेसिडेंट प्रोफ़ेसर(डॉ.) रश्मि जैन तथा प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी उपस्थित थे। अपने सम्बोधन-वक्तव्य के दौरान डॉ. अंशु सुराना (उपकुलाध्यक्ष) – "युवा शक्ति ही राष्ट्र की सबसे बड़ी सम्पत्ति है; इसे सही दिशा में निखारना हम सभी का कर्तव्य है।" प्रेसिडेंट प्रोफ़ेसर(डॉ.) रश्मि जैन ने कहा- "स्वदेशी अपनाओ, स्वावलंबी बनो। यही स्वामी विवेकानंद का मूल संदेश है, जिसे हमें अपने जीवन में उतारना चाहिए।"

प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी ने– "शिक्षा के साथ-साथ नैतिकता और सेवा भावना को भी अपनाएँ, तभी हम भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार होंगे।" समारोह में सभी वक्ताओं ने स्वदेशी अपनाओ का संदेश देते हुए स्वामी विवेकानंद के जीवन से प्रेरित विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने युवाओं को आत्मविश्वास, नैतिकता और राष्ट्र सेवा के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर आयोजित 200 मीटर दौड़ का संचालन खेल समन्वयक श्री यश यादव ने किया, जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर अपनी ऊर्जा और टीम स्पिरिट का परिचय दिया। राष्ट्रीय युवा दिवस का मुख्य उद्देश्य स्वामी विवेकानंद के आदर्शों को युवा वर्ग में प्रसारित करना है, जैसा कि भारत सरकार द्वारा हर वर्ष 12 जनवरी को इस दिन को मनाने का निर्णय लिया गया है। इस वर्ष का कार्यक्रम भी उसी चेतना को आगे बढ़ाने का एक सफल प्रयास रहा। कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थित अतिथियों एवं प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया तथा भविष्य में भी ऐसे ही उत्साहपूर्ण आयोजनों की अपेक्षा व्यक्त की गई।

महात्मा ज्योतिबा फुले: सामाजिक क्रांति एवं महिला सशक्तिकरण के अग्रदूत

भारत के सामाजिक पुनर्जागरण के इतिहास में महात्मा ज्योतिबा राव फुले का नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। वे न केवल एक महान समाज सुधारक थे, बल्कि उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव, अन्धविश्वास, स्त्री-पुरुष असमानता और शैक्षणिक विषमता के विरुद्ध आजीवन संघर्ष किया। फुले दम्पति ने भारतीय समाज में सामाजिक न्याय और लैंगिक समानता की अलख जगायी। महात्मा ज्योतिबा राव फुले 19वीं शताब्दी के उन महान समाज सुधारको में से थे, जिन्होंने भारतीय समाज को नई दिशा प्रदान की। उन्होंने जातिवाद, अन्धविश्वास, स्त्री–दासता और अशिक्षा के विरुद्ध आवाज उठायी। फुले दम्पति ने समाज में शिक्षा, समानता, और स्त्री-स्वाभिमान की मशाल जलाई। उस समय महात्मा ज्योतिबा राव फुले ने अपने विचारों तथा कर्मों से एक नई सामाजिक चेतना का संचार किया। वे भारतीय समाज के पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने दलित जातियों तथा महिलाओ के लिए शिक्षा का द्वार खोला। 1848 ई. में उन्होंने पुणे में भारत का पहला कन्या विद्यालय प्रारम्भ किया, जिसकी प्रथम शिक्षिका उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले थीं। यह घटना भारतीय समाज में एक नई जागृति की शुरुआत थी। महात्मा ज्योतिबा फुले (1827-1890) ने अपने जीवन में उस युग की रूढ़ीवादी सोच को चुनौती दी, जब दलितों व महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखा जाता था। 1848 ई. में उन्होंने भारत का पहला कन्या विद्यालय खोला , जो उस समय की सामाजिक व्यवस्था के लिए एक क्रन्तिकारी कदम था। महात्मा फुले का मानना था कि अज्ञान ही समस्त सामाजिक बुराइयों की जड़ है, इसलिए उन्होंने शिक्षा को समाज सुधार का सबसे प्रभावी हथियार माना। उन्होंने अस्पृश्यता, ऊंच-नीच, ब्राह्मणवादी वर्चस्व और जातिगत भेदभाव के विरुद्ध व्याप्त आन्दोलन चलाया, उनके विचार जाति आधारित व्यवस्था को चुनौती देते थे। वे मानते थे कि सामाजिक समानता के बिना राष्ट्र की प्रगति असंभव है। महात्मा फुले ने कहा - "ईश्वर ने सभी मनुष्यों को समान बनाया है, भेदभाव मनुष्यों की देन है।" उनके नेतृत्व में एक ऐसा जनांदोलन चला जिसने समाज को परिवर्तन की और अग्रसर किया।

महिला सशक्तिकरण एवं स्त्री-शिक्षा का संवाहक

महात्मा फुले और सावित्रीबाई फुले ने न केवल बालिकाओं के लिए शिक्षा के द्वार खोले बल्कि समाज में स्त्रियों की गरिमा को पुनर्स्थापित किया। महात्मा फुले ने महिलाओं को समाज में समान अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष किया। उस समय बालविवाह, विधवा-दुर्व्यवहार और स्त्रियों पर अत्याचार व्यापक रूप से प्रचलित थे। फुले दम्पति ने महिला शिक्षा को प्राथमिकता देते हुए यह सिद्ध किया कि- 'शिक्षा ही मुक्ति का मार्ग है।' उन्होंने विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया और सावित्रीबाई फुले के साथ मिलकर 1853 ई. में 'बालहत्या प्रतिबंधक गृह' की स्थापना की, जो उस युग में अत्यंत साहसिक कदम था। उनका विश्वास था कि स्त्रियों को शिक्षा मिलेगी तो वे आत्मनिर्भर और सम्मानपूर्वक जीवन जी सकेंगी।

महात्मा फुले ने कहा- "जो समाज अपनी माताओ और बहनों को अंधकार में रखता है, वह कभी प्रगति नहीं कर सकता।" महात्मा फुले के कार्यो ने महिला आन्दोलन की नींव रखी, जो आगे चलकर महिला अधिकारों के संवैधानिक प्रावधानों में परिणित हुआ।

सत्यशोधक समाज की स्थापना और उसका प्रभाव

1873 ई. में महात्मा फुले ने 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की, जिसका उद्धेश्य समाज में समानता, भाईचारा, स्त्री-पुरुष समानता और जातिवाद का उन्मूलन था। इस संगठन ने समाज के शोषित, वंचित और दलित वर्गों को एकजुट कर, उन्हें आत्मसम्मान और अधिकारों के लिए जागरूक किया। सत्यशोधक समाज के माध्यम से महात्मा फुले ने यह संदेश दिया कि किसी व्यक्ति की श्रेष्ठता उसके जन्म से नहीं बल्कि कर्म से निर्धारित होती है। सत्यशोधक समाज ने विवाह संस्कारों को भी सरल बनाया और ब्राह्मणवादी पाखंडों के विरुद्ध जनचेतना का संचार किया। इस समाज का मुख्य संदेश था- 'सत्य को खोजो, अन्याय के विरुद्ध खड़े रहो।'

साहित्यिक योगदान एवं विचारधारा -

महात्मा फुले एक उच्चकोटि के चिन्तक व लेखक भी थे। उनकी प्रमुख रचनाएँ 'गुलामगिरी'(1873 ई.), शेतकन्यांचा असूड (1883 ई.) तथा कई निबंध संग्रह सामाजिक अन्याय की निंदा करते हैं। 'गुलामगिरी' में उन्होंने भारतीय समाज की दासता और शोषण पर तीखा प्रहार किया, वहीं 'शेतकन्यांचा असूड' में उन्होंने किसानों की दुर्दशा और समाज की असमान आर्थिक व्यवस्था को उजागर किया। उनकी विचारधारा समानता, तर्कवाद, मानवतावाद और शिक्षा पर आधारित थे। महात्मा फुले कहते थे – "जो जाति स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखती है, वह कभी प्रगति नहीं कर सकती।" अत: फुले का मानना था कि सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा का प्रसार, आर्थिक न्याय और धार्मिक सहिष्णुता आवश्यक है।

वर्तमान संदर्भ में महात्मा फुले की प्रासंगिकता

आज जब भारत महिला सशक्तिकरण, समानता और सामाजिक न्याय की दिशा में अग्रसर है, तब महात्मा फुले के विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं। उनके आदर्श हमें यह प्रेरणा देते हैं कि शिक्षा और सामान अवसरों के बिना लोकतंत्र अधूरा है। महात्मा फुले की सोच आज भी नीति-निर्माण, महिला शिक्षा, दलित अधिकार, सामाजिक न्याय और मानवाधिकार के क्षेत्र में मार्गदर्शक बनी हुई है। उनके आदर्श हमें यह संदेश देते हैं कि वास्तविक विकास तभी संभव है, जब समाज के हर वर्ग को सामान अवसर मिले। महात्मा फुले के विचार भारत के संविधान में निहित समानता, स्वतंत्रता और न्याय के सिद्धांतों के मूल में दिखाई देते हैं।

निष्कर्ष

महात्मा ज्योतिबा राव फुले ने समाज को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने का कार्य किया। वे एक सच्चे सामाजिक क्रांति के अग्रदूत और महिला सशक्तिकरण के मार्गदर्शक थे। उनके कार्यों ने भारत के सामाजिक ढाँचे को नया आयाम दिया और आधुनिक भारत की नींव को सुदृढ़ किया। उनका जीवन इस सत्य का प्रमाण है कि एक शिक्षित समाज ही सशक्त और न्यायपूर्ण समाज का निर्माण कर सकता है।

डॉ. सीता राम माली
सह-आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, वाटिका, जयपुर